जीन्स का विश्लेषण करके भ्रूण का जिनेटिक चित्र मिल जाएगा। हो सकता है कि माता-पिता अपने बच्चे का भावी चेहरा वगैरह कम्प्यूटर पर देख सकें।

रीमेकिंग एडन के लेखक ली एम. सिल्वर का कहना है कि भविष्य में दो तरह के लोग होंगेः पहले, जीन समृद्ध, जो अपनी संतानों के जीन चुन सकेंगे और दूसरे, जो कुदरती ढंग से प्रजनन करते रहेंगे। उर्वरता विशेषज्ञ राबर्ट विंस्टन ने सिल्वर की राय का विरोध किया है। कुल मिलाकर लगता यही है कि क्लोनिंग का नियमन ही अकलमंदी है, प्रतिबंध नहीं। *(स्रोत विशेष फीचर्स)*

# मोटापे की एक और दवाई!

मोटापा एक धंधा बनता जा रहा है। अब स्वीडन की एक बायोटेक कम्पनी कारो बायो ने एक और दवा का परीक्षण शुरू किया है। बंदरों पर प्रयोग के जो परिणाम प्रकाशित हुए हैं उन्हें देखकर तो लगता है कि यह कोई चमत्कारिक औषधि है। इन बंदरों को एक सप्ताह तक यह दवा देने पर उनका वज़न 7 प्रतिशत कम हो गया। इसके अलावा खून की नलियों को जाम करने वाला कोलेस्ट्रॉल भी कम हुआ।

यह दवा दरअसल थायरॉइड हार्मोन का एक परिवर्तित (मानव निर्मित) रूप है। इसे KB-141 नाम दिया गया है। यह हार्मोन शरीर की चयापचय यानी मेटाबोलिक दर बढ़ाने का काम करता है। नतीजा यह होता है कि शरीर ज़्यादा भोजन का ऑक्सीकरण करता है। अतः आप जो भी खाते हैं वह कार्बन डाई ऑक्साइड बनकर उड़ जाता है। इसके अलावा इस कृत्रिम हार्मोन की मदद से शरीर में कम घनत्व वाले लिपिड कोलेस्ट्रॉल और लिपोप्रोटीन की मात्रा कम होती है। दिक्कत यह रही है कि कुदरती थायरॉइड हार्मोन दो काम करता है - चयापचय की दर बढ़ाना और हृदय गति को बढ़ाना। थायरॉइड हार्मोन हृदय गति को खतरनाक हद तक बढ़ा सकता है। वास्तव में कारो बायो कम्पनी ने इसी मामले में उल्लेखनीय सफलता हासिल की है।

शरीर में थायरॉइड हॉर्मोन के दो ग्राही होते हैं - इनमें से एक ग्राही से हार्मोन के जुड़ने पर हृदय गति बढ़ती है। कारो बायो के वैज्ञानिकों ने हॉर्मोन का एक ऐसा रूप तैयार कर लिया है जो इस ग्राही से नहीं जुड़ता मगर उस दूसरे ग्राही से जुड़ जाता है जो चयापचय दर बढ़ाने के लिए ज़िम्मेदार है।

न्यू जर्सी के ब्रिस्टल मेयर्स स्क्विब में किए गए अध्ययनों से पता चला है कि KB-141 कोलेस्ट्रॉल की मात्रा कम करता है और ऑक्सीजन की खपत बढ़ाता है। इसका हृदय गति पर लगभग कोई असर नहीं होता। इस तरह से किसी हॉर्मोन की दो क्रियाओं को अलग-अलग कर पाने में सफलता को एक बड़ी उपलब्धि माना जा रहा है। मगर अभी भी दोनों क्रियाओं को पूरी तरह अलग-अलग नहीं किया जा सका है।

बंदरों में नाटकीय परिणामों के बावजूद बहुत आशान्वित होने की ज़रूरत नहीं है। इससे पहले लेप्टिन नामक औषधि भी इंसानी परीक्षणों में नाकाम हो चुकी है। लेप्टिन व्यक्ति की भूख को कम करने पर आधारित थी। दूसरी ओर, KB-141 के साथ तो वे बंदर भरपेट खाते रहे थे और फिर भी वज़न कम होता रहा था। अब इंसानी परीक्षण की बारी है। *(स्रोत विशेष फीचर्स)*


## स्रोत के ग्राहक बनें, बनाएं

**सदस्यता शुल्क कृपया एकलव्य, भोपाल के नाम बने ड्राफ्ट या मनीऑर्डर से**

*एकलव्य, ई-7/ एच.आई.जी. 453, अरेरा कॉलोनी, भोपाल (म.प्र.) 462 016*

**के पते पर भेजें।**